(1) वास्तुकला (2) मूर्तिकला (3) चित्रकला
(4) संगीत कला (5) काव्यकला

दृश्य कला – दृश्य कला तीन प्रकार की होती है
(1) मूर्तिकला (2) वास्तुकला (3) चित्रकला ।

श्रव्य कला – श्रव्य कला दो प्रकार की होती है –
(1) संगीत कला (2) काव्य कला ।

चित्रकला के रूप –

वस्तु चित्रण से अभिप्राय – वस्तु या पदार्थ चित्रण का अभिप्राय है कि जिन-जिन पदार्थों का हमें चित्र बनाना हो उनको, रूप-रंग तथा आकार को ऐसी अनुकृति तैयार कर देना है कि देखने वाले को ~~आर~~ वास्तविक वस्तु और उनके चित्र में कोई अन्तर मालूम न हो। देखने वाला इस भ्रम में पड़

जाये कि वह किसी वस्तु (Object) को देख रहा है या किसी के बनाये हुए चित्र को।

स्मृति चित्रण — अपनी स्मृति के आधार पर कभी देखी - सुनी घटनाओं, वस्तुओं अथवा दृश्यादि का चित्रण ही स्मृति - चित्रण कहलाता है।

स्वतन्त्र भाव प्रकाशन की भूमिका — चित्रकला में स्वतन्त्र भाव - प्रकाशन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसका अर्थ विचारों या भावों को स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट करना है। अर्थात मन में उत्पन्न भावों की झलक को चित्र द्वारा प्रकट करना ही स्वतन्त्र भाव - प्रकाशन है।

कहानी चित्रण — स्वतन्त्र भाव - प्रकाशन का ही एक रूप कहानी चित्रण है। जिन चित्रों की सहायता से किसी विशेष कहानी को दर्शाया जाता है, उसे कहानी चित्रण (Story Telling Drawing) कहते हैं।

विज्ञापन चित्र का महत्व — विज्ञापन चित्र एक प्रकार का प्रचार चित्र है, जो निश्चित वस्तुओं तथा सेवाओं के अस्तित्व तथा विशेषताओं की ओर ध्यान आकृष्ट करता है।

छाया तथा दृश्य-चित्र के उदाहरण — वस्तु या प्राणी के आकारों को छाया द्वारा प्रकट किये जाने वाले चित्रों को छाया - चित्र (Mass Drawing) कहते हैं।

जिन चित्रों में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक दृश्यों को दिखाया जाता है, उसे दृश्य - चित्र (Scenery) कहते हैं दृश्य - चित्र में सुन्दरता, ~~अनु~~ अनुपात, सन्तुलन आदि बातों का पूर्ण रूप से होना आवश्यक है।

अक्षर कला — आधुनिक युग में अक्षर ड्राइंग का एक विशेष महत्व है। किसी माडल का नाम मानचित्रों या विज्ञापन चित्रों का सौन्दर्य कलात्मक अक्षर पर ही निर्भर

करता है। इसलिए कला के विद्यार्थियों के लिए अक्षर ज्ञान ड्राइंग का ज्ञान अत्यन्त उपयोगी है।

आलेखन कला के सिद्धान्त —
अलंकारपूर्ण रचना को आलेखन कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में इसे डिजाइन कहते हैं संक्षेप में, किसी धरातल को अलंकृत करनेवाली विशिष्ट रचना को आलेखन (Design) कहते हैं।

निमंत्रण तथा बधाई पत्र के उदाहरण —
तुम्हारे घर में जब तिलक, शादी - ब्याह आदि ऐसे शुभ अवसर आते हैं, तो उस समय तुम अपने मित्रों को और सगे - सम्बन्धियों को इस आशय का सूचना - पत्र भेजते हैं, जो रंग - बिरंगे छपे कागज पर लिखा या छपा होता है। इसे निमंत्रण - पत्र कहते हैं। इसी प्रकार का एक और पत्र है, जो प्राय: नये वर्ष के अवसर पर तुम्हारे घर मित्रों, सगे - सम्बन्धी भेजते हैं, जिसमें

इस बात की शुभकामना प्रकट की जाती है, कि 'नया साल आपके लिए शुभ, मंगलमय एवं लाभकारी हो।'

सजाने के माध्यम

चित्र पट्टिका (stencil) — 'स्टेन्सिल' सजावट का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। जब किसी लेख या डिजाइन को बार-बार छापने की आवश्यकता पड़ती है, तो स्टेन्सिल का प्रयोग करते हैं। इसके द्वारा थोड़े समय में अधिक स्थानों पर एक जैसे चित्र बनाये जा सकते हैं।

भारतीय कला और संस्कृति का परस्पर संबंध —

कला मानव संस्कृति की उपज है। इसका उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। इस भावना की वृत्ति व मानसिक विकास के लिए